SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. SESSION – 20-22

SUBJECT - C-08 U-3

TOPIC NAME – Understanding relation between Edu. Know. & Philosophy

DATE - 12-01-22

Scanned with CamScanner

शिक्षा EDUCATION :- शिक्षा एक ऐसा साधन है जो मानव को प्राणी जगत के अन्य जीवों से अलग करती है. शिक्षा का मानव जीवन में बड़ा महत्व है। शिक्षा के बिना मानव पशु के समान है। शिक्षा मानव को एक सामाजिक प्राणी बनाकर सांस्कृतिक धरोहर को आगे ~~बढ़ाकर~~ आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित करने के काबिल बनाती है। शिक्षा से ही मानव का सर्वांगिण विकास होता है, तथा मानव का सुखमय जीवन व्यतित करता है।

शिक्षा के द्वारा हम सामाजिक जीवन में अपने कर्तव्य का पालन करते हुए राष्ट्र के विकास में योगदान देते है। शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी एक महत्वपूर्ण साधन है।

* According to DR. RADHAKRISHNAN :- "शिक्षा व्यक्ति को और सामाजिक को सशक्त बनाने की प्रक्रिया है।"

* According to J. KRISHNA MURTI :- शिक्षा द्वारा ही मनुष्य को जीवन का सही अर्थ समझाया जा सकता है और शिक्षा द्वारा ही उसे अनुचित मार्ग से सद्मार्ग पर लाया जा सकता है।

* According to ARVIND :- "शिक्षा का कार्य आत्मा को विकसित करने में सहायता देना।

KNOWLEDGE (ज्ञान) :- सामान्यतः ज्ञान से तात्पर्य मानव जाति की उस जानकारी से लिया जाता है जो उसे भौतिक जगत या आध्यात्मिक जगत के बारे में हो। हमारा सारा ज्ञान हमारे अनुभव पर ही आधारित होता है, ज्ञान या विचार प्राप्त करने का मुख्य साधन है इंद्रियअनुभव जिसमें इंद्रियों की सहायता से मन ज्ञान से भरपूर होता है।

अर्थ :- ज्ञान शब्द 'ज्ञ' धातु से बना है जिसका अर्थ जानना, बोध, अनुभव से माना जाता है आसान शब्दों में कहें तो अनुभव अथवा बोध होना ज्ञान है।

- उदाहरण - 1. यदि हमें दूर से पानी दिखाई दे रहा है और नजदीक जाने पर भी पानी मिलता है तो कहा जाएगा हमें उस जगह पानी होने का वास्तविक ज्ञान हुआ।
- उदाहरण - 2. इसका उल्टा जाने पर हमें रेत दिखाई दे तो यह कहा जायेगा कि उस जगह पानी होने का जो ज्ञान था वह गलत था। अतः ज्ञान एक प्रकार की मनोदशा है ज्ञाता के मन में होने वाली एक प्रकार कि हलचल है

मानव के ज्ञान को वास्तविक समझ बनाने के लिए इसमें कुछ अनिवार्य शर्तों का होना आवश्यक है. जैसे - विश्वास, विश्वास का सत्य होना प्रमाणिकता का पर्याप्त आधार होना।

Scanned with CamScanner

परिभाषा :- प्लेटो के अनुसार :- "विचारों की दैवीय व्यवस्था, और अच्छा - परमात्मा के स्वरूप को जानना ही सच्चा ज्ञान है।

- बौद्ध दर्शन के अनुसार :- ज्ञान वह है जो मनुष्य को संसारिक दुखों से छुटकारा दिलाए

- सुकरात के अनुसार - जो सच्चा ज्ञान प्राप्त कर लेता है वह सर्वगुण संपन्न हो जाता है।

- डीवी के अनुसार :- केवल वही ज्ञान ही वास्तविक है जो हमारी प्रकृति में संगठित हो गया है, जिससे हम पर्यावरण को अपनी आवश्यकताओं के अनुकूल बनाने में समर्थ हो सके और अपने आदर्शों तथा इच्छाओं को उस स्थिति के अनुकूल बना ले जिसमें हम रहते है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से ज्ञान के संबंध में निम्नलिखित बिंदु निकलते है।

1. ज्ञान वह है जो सत्य है।
2. ज्ञान में ज्ञाता का विश्वास होता है।
3. ज्ञाता के पास उस ज्ञान के सत्य होने का प्रमाण होता है।
4. ज्ञान अज्ञानता पर अंधविश्वासों को दूर करता है।
5. ज्ञान चरित्र का निर्माण करता है तथा अनुशासित करता है
6.

ज्ञान का महत्व :- मानव जीवन में ज्ञान का बहुत अधिक महत्व है। मानव जीवन के लिए ज्ञान उसकी रीढ़ की हड्डी की तरह कार्य करता है, इसलिए ज्ञान का महत्व आवश्यक है।

1. ज्ञान को मानव की तीसरी आंख कहते है।
2. ज्ञान समाज को सुधारने में सहायता करता है जैसे - अंधविश्वास रूढ़िवादिता को दूर करता है।
3. ज्ञान शिक्षा प्राप्ति का साधन है।
4. ज्ञान स्वंय को जानने का उचित साधन है।
5. ज्ञान मानव जीवन का सार है। विश्व का नेत्र है ज्ञान के बिना कोई व्यक्ति
6. ज्ञान विश्व के रहस्यों को खोजता है।
7. ज्ञान का प्रकाश सूर्य के समान है, ज्ञानी मनुष्य ही अपना और दूसरे का कल्याण करने में सक्षम होता है
8. ज्ञान शाश्वत है
9. नैतिकता ज्ञान से ही प्राप्त कि जा सकती है
10. ज्ञान सद्गुण व अज्ञान पाप है
11. ज्ञान की सीमाएं निश्चित नहीं है

Scanned with CamScanner

शिक्षा और दर्शन (Education & Philosophy) :-

Introduction :- शिक्षा और दर्शन के बीच गहरा संबंध है। प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री रॉस ने कहा कि "दर्शन और शिक्षा" एक ही सिक्के के दो भाग है, जो एक ही वस्तु के विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करते हैं। शिक्षा जीवन का क्रियात्मक पक्ष और दर्शन विचारात्मक पक्ष है।

शिक्षा और दर्शन एक दूसरे के पूरक हैं। शिक्षा का उद्देश्य, व्यवस्था, संगठन और शिक्षण विधियों का विकास समझने के लिए दार्शनिक विचारधाराओं का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। तभी तो फिशे ने कहा है "शिक्षा दर्शन कि सहायता से के बिना पूर्णता और स्पष्टता को प्राप्त नहीं कर सकते"

शिक्षा और दर्शन में घनिष्ठ संबंध है। शिक्षा मानव जीवन के विकास का साधन है। परिस्थितियों के निर्माण में शिक्षा का बड़ा योगदान है। वहीं दर्शन लक्ष्य का निर्माण करता है और शिक्षा इस लक्ष्य कि पूर्ति के लिए साधन के रूप में कार्य करती है।

* Meaning of Philosophy :- दर्शन जिसे अंग्रेजी में Philosophy कहते हैं, यूनानी भाषा के दो शब्दों Philos तथा Sophia से मिलकर बना है Philos का अर्थ है प्रेम (LOVE) तथा Sophia को अर्थ है ज्ञान (WISDOM) इस प्रकार प्लेटो ने दर्शन का अर्थ ज्ञान से प्रेम का माना है। उनके अनुसार :-

"वह व्यक्ति जो प्रत्येक प्रकार के ज्ञान के लिए रूचि रखता है, तथा जो सीखने का इच्छुक हो तथा जिसकी सीखते-सीखते संतुष्टि नहीं होती दार्शनिक कहलाता है

* Definition :- सुकरात के अनुसार :- दार्शनिक वे है, जो सत्य के दर्शन के प्रेमी
→ (इच्छुक) होते हैं। "Philosophers ~~ar whos~~ those who are Lovers of the vision of truth."

→ डॉ०

* शिक्षा और दर्शन के बीच संबंध [Relationship between Education and Philosophy) :-

शिक्षा और दर्शन में घनिष्ठ संबंध है।

शिक्षा दर्शन की वह शाखा है, जिसमें शिक्षा कि समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। उनका समाधान प्रस्तुत किया जाता है और शिक्षा की प्रक्रिया के स्वरूप को निश्चित किया जाता है। शिक्षा दर्शन में इस बात का अध्ययन किया जाता है कि दर्शन कि विभिन्न विचारधाराओं का शिक्षा की प्रक्रिया पर क्या प्रभाव पड़ता है। जिस प्रकार दर्शन, आत्मा क्या है? जीव क्या है? ब्रमाण्ड क्या है? ईश्वर का स्वरूप कैसा है? सृष्टी की उत्पति कैसे हुई? तर्क कि विधि क्या है? आदी प्रश्नों पर विचार विचार करता है, उसी प्रकार शिक्षा दर्शन शिक्षा संबंधी प्रश्नों जैसे शिक्षा क्या है, शिक्षा के उद्देश्य क्या है? शिक्षा के मूल्य क्या है? पाठ्यक्रम कैसा हो, शिक्षण विधि कैसी हो आदी प्रश्नों पर विचार करके उनका हल प्रस्तुत करते है। दर्शन द्वारा स्थापित सिद्धांतों का शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग किस प्रकार से किया जाना चाहिए तथा इन सिद्धांतों का व्यवहारिक रूप क्या हो, इसका उत्तर शिक्षा दर्शन द्वारा दिया है। पैट्रिज ने कहा गहन अर्थ में यह कहना सर्वथा उचित होगा कि जिस प्रकार शिक्षा दर्शन पर आधारित है, इसी प्रकार दर्शन शिक्षा पर आधारित है।

* शिक्षा का दर्शन पर प्रभाव [Impact of Education on Philosophy.) :-

शिक्षा एवं दर्शन के परस्पर संबंध का दूसरा भाग है - शिक्षा का दर्शन पर प्रभाव। इस प्रभाव को निम्न रूपों में इस प्रकार से प्रस्तुत किया है।

- शिक्षा-दर्शन को जिंदा रखती है।
- शिक्षा दर्शन को गतिशील बनाती है।
- शिक्षा दर्शन के विकास में सहायता करती है।
- शिक्षा दर्शन को जन्म देती है।

(*दर्शन कि विशेषता)

निष्कर्ष :- उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि शिक्षा और दर्शन एक दूसरे पर आश्रित है। दोनों में घनिष्ठ संबंध है। रॉस का कथन पूर्णतया सत्य है कि शिक्षा एवं दर्शन एक सिक्के के दो भाग है जो अलग नहीं बल्कि एक दूसरे में निहित है। दर्शन और शिक्षा एक दूसरे को किसी न किसी रूप में प्रभावित करते है। एक के अभाव दूसरे के अस्तित्व की कल्पना नहीं कि जा सकती।

Scanned with CamScanner

X

दर्शन की विशेषताएँ :-

1. यह जीवन का मार्गदर्शक है। (2) यह एक मानसिक गतिविधि है
(3) यह सत्य व वास्तविकता कि खोज है (4) यह एक मानसिक गतिविधि है।
(5) यह जीवन और आस्तित्व के बारे में खोज पर आधारित है।
6. यह विश्वास, विचार प्रणाली के विभिन्न भागों के बीच संबंध को दर्शाता है।
7. यह विश्व के स्वरूप की व्याख्या करती है।
8. यह तथ्यों से संबंधित सिद्धांतों की खोज है। (9.)
9